

राम की आँखों से आँसू वह गये
 हाथ लक्ष्मन हम अकेले रह गये
 मुँह दिखा न पाऊंगा मैं मात को
 नींद कैसे आ गई-मेरे भात को ३३३३
 कोई तो बतलाओ-कुह ये कह गये ॥२॥

हाथ लक्ष्मन हम -----
 राम की आँखों -----

आये वैद्य सुषेन देखा हाथ को
 क्या कहें-हनुमन्त-तेरे साथ को ३३३३
 देर न कीन्हीं लला फिर उड़ गये ॥२॥

हाथ लक्ष्मन हम -----
 राम की आँखों -----

सोचा जगमग-ज्योत सब मैं क्या करूँ
 पूरे पर्वत को उठाकर-कर धरूँ ३३३३
 फिर पवन के वेग हनुमत बह गये ॥२॥

हाथ लक्ष्मन हम -----
 राम की आँखों -----

राम ने देखा कि हनुमत आ गये
 दी संजीवनी फिर तो लक्ष्मन उठ गये ॥२॥
 भाई को पाने "श्रीबाबाश्री" राम सह गये
 भाई लक्ष्मन-भाई से फिर मिल गये
 राम के आँसू प्यार में बह गये ॥२॥